Volume: 3 Issue: 9 Pages: 11-15

भारत में गठबंधन सरकारों की सफलता-एक समीक्षा

[*1] श्रीमती चंदा शर्मा एवं [2]प्रो. अमरजीत सिंह

[*1] शोध छात्रा, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] अधिष्ठाता, ग्रामीण विकास एवं व्यवसाय प्रबंधन संकाय, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 08/Aug/2024
Accepted: 17/Sep/2024

***Corresponding Author**
श्रीमती चंदा शर्मा
शोध छात्रा, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश:
भारतीय लोकतंत्र में बहुदलीय व्यवस्था का प्रावधान है। इसलिए कई बार किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पाता। इससे राजनीतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अतः ऐसी स्थिति में पुनः निर्वाचन के व्यय से बचने के लिए दो या दो से अधिक दलों के द्वारा गठबंधन सरकार की स्थापना की जाती है। पिछले कुछ दशकों से भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकारों का वर्चस्व रहा है। ऐसे में गठबंधन सरकार की विशेषताओं, उसकी सफलता और असफलताओं की सम्भावनाओं को जानना आवश्यक हो जाता है। गठबंधन उस प्रक्रिया को कहा जाता है, जब दो या दो से अधिक व्यक्ति या दल किसी विशेष उद्देश्य की पुष्टि हेतु अस्थायी रूप से अल्पकाल के लिए जुड़ते हैं। राजनीति के संदर्भ में गठबंधन का आशय दो या दो से अधिक दलों के मेल स सरकार बनाने के जादुई आकड़े या बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने से है। प्रस्तुत अध्ययन में 2004 से 2014 तक संप्रग एवं 2014 से 2024 तक राजग की सरकार के विकासात्मक प्रयासों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। यह गठबंधन निर्वाचन से पहले या निर्वाचन के बाद कभी भी हो सकता है। कभी-कभी दो विपरीत विचारधारा वाले दलों में भी गठबंधन बनाकर पूर्व में तय किए गए आम सहमति के विषयों पर कार्य करने का आश्वासन लेकर सरकार का गठन किया जाता है, जिसे सहमति की सरकार भी कहा जाता है। गठबंधन के प्रमुख दल के पास बहुमत का आकड़ा हो या उसके करीब हो तो गिरने की संभावना कम होती है।

मुख्य शब्द: गठबंधन, भारतीय लोकतंत्र, राजनीति में गठबंधन, एक समीक्षा

प्रस्तावना:

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। प्रत्येक पांच वर्ष की अवधि के बाद यहाँ लोकसभा और विधानसभा चुनाव होते हैं। इन चुनाओं के मध्यम से जनता अपने प्रतिनिधि को चुनती है, जो केन्द्र और राज्य स्तर पर सरकार का गठन करते हैं। किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नही होने पर अन्य दलों की सहायता लेकर मिली-जुली सरकार बनाली जाती है, जिसे हम गठबंधन की सरकार के नाम से जानते है। गठबंधन की सरकार दो या दो से अधिक दल मिलकर बनाते हैं। जनता का किसी एक राजनीतिक दल में विश्वास नहीं होने पर मतदाता जब विकल्प की तलाश करते हैं, तब किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने की स्थिति में गठबंधन की प्रक्रिया शुरू होती है। भारत जैसे विशाल देश में भारतीय समाज आज न केवल जाति-धर्म और गरीब-अमीर वर्गों में बँटा हुआ है, बल्कि जीवन-शैली, व्यवसाय आदि के आधार पर भी वर्ग बने हुए हैं। क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय दल प्रभावी होते हैं क्योंकि वे मतदाताओं के हितो के अनुकूल सिद्ध होते है। भारत में सर्वप्रथम गठबंधन की प्रथम सरकार राज्य स्तर पर प्रारम्भ हुई। 1999 के चुनाव के बाद छोटे-छोटे दलों की सरकार हो गई। क्षेत्रीय दल हावी होने लगा। किन्तु ऐसा माना जाता है कि जल्दी-जल्दी चुनाव होने के कारण देश पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। गठबंधन सरकार का मंत्री मंडल दिशाहीन और मूल्य विहीन राजनीति को बढ़ावा देते है। लोकतंत्र की सफलता के लिए राजनीतिक दलों में सहनशीलता और कत्तव्य पराणयता की आवश्यकता पहली है।

गठबंधन का युग

1989 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी की हार हुई थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि किसी दूसरी पार्टी को इस चुनाव में बहुमत मिल गया था। कांग्रेस अब भी लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी थी, लेकिन बहुमत में न होने के कारण उसने विपक्ष में बैठने का निश्चय किया राष्ट्रीय मोर्चे को (जनता दल और अन्य क्षेत्रीय दल) परस्पर विरूद्ध दो राजनीतिक समूहों भाजपा और वाम मोर्चे ने समर्थन दिया। इस समर्थन के आधार पर राष्ट्रीय मोर्चा ने एक गठबंधन सरकार बनायी, लेकिन इसमें भाजमा और वाम मोर्चे ने शिरकत नही की।

गठबंधन की राजनीति

नब्बे का दशक कुछ ताकतवर पार्टियों और आंदोलनो के उभार का साक्षी रहा। इन पार्टियों और आंदोलनों ने दलित तथा पिछड़े वर्ग की नुमाइदंगी की इन दलों में से अनेक ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं की भी दमदार दावेदारी की। 1996 में बनी संयुक्त मोर्चे की सरकार में जिन पार्टियों ने अहम किरदार निभाया, उनमे संयुक्त मोर्चा 1989 के राष्ट्रीय मोर्चे के ही समान था, क्योंकि इसमें भी जनता दल और कई क्षेत्रीय पार्टियाँ शामिल थी। इस बार भाजपा ने सरकार को समर्थन नहीं दिया। संयुक्त मोर्चा की सरकार को कांग्रेस का समर्थन हासिल था। 1989 में भाजपा और वाम मोर्चा दोनो ने राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार और कांग्रेस को सत्ता से बाहर रखना चाहते थे। बहरहाल इन्हें ज्यादा दिनों तक सफलता नही मिली और भाजपा ने 1991 तथा 1996 के चुनावों में अपनी स्थिति लगातार मजबूत की। 1996 के चुनावों मे यह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। इससे भाजपा को सरकार बनाने का न्यौता मिला। लेकिन अधिकांश दल, भाजपा की नीतियों के खिलाफ थे और इस वजह से भाजपा की सरकार लोकसभा में बहुमत हासिल नही कर सकी। आखिरकार भाजपा एक गठबंधन (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन-राजग) के अगुआ के रूप में सत्ता में आयी और 1998 के मई से 1999 के जून तक सत्ता में रही। फिर 1999 के अक्टूबर में इस गठबंधन ने दोबारा सत्ता हासिल की। राजग की इन दोनो सरकारों में अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने। 1999 की राजग सरकार ने अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा किया।

इस तरह 1989 के चुनावों से भारत में गठबंधन की राजनीति के एक लंबे दौर की शुरूआत हुई। इसके बाद से केन्द्र में 11 सरकारे बनी। ये सभी या तो गठबंधन की सरकारे थी अथवा दूसरे दलो के समर्थन पर टिकी अल्पमत की सरकारे थी जो इन सरकारो में शामिल नही हुए। इस नये दौर में कई सरकार क्षेत्रीय पार्टियों की साझेदारी अथवा उनके समर्थन से ही बनायी जा सकती थी। यह बात 1989 के राष्ट्रीय मोर्चा सरकार 1996 और 1997 की संयुक्त मोर्चा सरकार, 1998 और 1999 की राजग, 2004 और 2009 की संप्रग सरकार पर समान रूप से लागू होती है। हालांकि 2014 में यह प्रवृत्ति बदल गयी है।

गठबंधन सरकारों का युग लम्बे समय से जारी कुछ प्रवृत्तियों की परिणति है। पिछले कुछ दशकों से भारतीय समाज में गुपचुप बदलाव आ रहे थे और इन बदलावों ने युग की जिन प्रवृत्तियों को जन्म दिया, वे भारतीय राजनीति को गठबंधन की सरकारो के तरफ ले आयी।

गठबंधन सरकार के फायदे

सरकार बनाने के लिये समान नीति का होना आवश्यक है। गठबंधन सरकार में भी समान नीति को मानने वाली पार्टियाँ सम्मिलित होती है। सरकार में शामिल होने वाले सभी राजनीतिक दलों द्वारा विचार-विमर्श किया जाता है। गठबंधन सरकार में साझा कार्यक्रम बनता है और उसको प्राप्त करना गठबंधन में शामिल सभी राजनीतिक दलों का सामूहिक उत्तरदायित्व होता है। सरकार द्वारा लिया गया निर्णय उसके विभिन्न घटक राजनीतिक दलो का निर्णय माना जाता है। इसलिये कोई भी कार्य करने से पूर्व सभी राजनीतिक दल विचार-विमर्श करता है और इससे देश की जनता के हित में अधिकाधिक निर्णय लिये जाते है। इसके कुछ प्रमुख लाभ यहाँ दिए जा रहे हैं-

- गठबंधन सरकार देश के सभी विचारों एवं रूचियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने की स्थिति नया निर्वाचन कराने के व्यय से मुक्ति प्राप्त होती है।
- विभिन्न दृष्टिकोणों को समाहित कर परस्पर समन्व के साथ कार्य सम्पन्न होते है।
- किसी दल विशेष के प्रभुत्व नहीं होने के कारण तानाशाही पर नियंत्रण स्थापित होता है।
- क्षेत्रीय हितों की अनदेखी नहीं हो पाती है एवं क्षेत्रीय मुद्दों पर भी कार्य किए जाते हैं।

गठबंधन सरकार से हानि

अल्पमत दलों द्वारा सरकार की स्थापना के लिये गठबंधन प्रायः निर्वाचन के बाद ही करते हैं। किसी भी दो दल का राजनीतिक मुद्दा निर्वाचन के लिये एक समय वही रहता है। वे गठबंधन तो मन्त्रिमण्डल के गठन के लिए करते है। गठबंधन के बाद विभिन्न राजनीतिक दल के नेता पद और मंत्री पद के लिए तनाव उत्पन्न करते हैं। इसमें प्रभावशाली राजनीतिक दल सरकार पर हावी हो जाते हैं, जिसके कारण अन्य दलो में वैमनस्यता की भावना आ जाती है। वैमनस्यता जब अधिक बढ़ जाती है वो गठबंधन से समर्थन वापस लेकर सरकार गिरा देते हैं। जिससे फिर जनता को आम चुनाव का सामना करना पड़ता है, जिससे देश को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है उससे तात्कालिक और दूरगामी परिणाम अत्यंत घातक होता है। गठबंधन सरकार की प्रमुख कमियाँ प्रस्तुत हैं-

- गठबंधन की सरकारें प्रायः अस्थिर होती हैं। गठबंधन में शामिल किसी भी घटक के विरोध करने पर सरकार गिर जाती है।
- इस प्रकार की सरकारो में आम सहमति पर पहुँचना बहुत कठिन होता है, जिससे निर्णय प्रभावित होते हैं।
- प्रत्येक दल अपने वोट-बैंक के प्राथमिकताओं पर बल देता है, जिससे परस्पर सहभागी दलों में निरंतर संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।
- नीतिगत निर्णय किस दल द्वारा लिए जायें एवं इन निर्णयों का उत्तरदायित्त्व किसे दिया जाये इसका अभाव होता है।
- छोटे से छोटे दलों के दबाव के चलते प्रायः बड़े दलों को अपने हितों का बलिदान करना पड़ता है।
- दीर्घकालीन हितों के साथ इस प्रकार के सरकार में समझौता करना पड़ता है।
- बहुत ही सामान्य हितों एवं परिस्थितियों में गठबंधन सरकार गिर जाती है।
- क्षेत्रीयता को इस प्रकार के सरकारों से बल मिलता है।

1969-71 के दौरान कांग्रेस में विभाजन के फलस्वरूप अल्पमत में आयी इंदिरा कांग्रेस सरकार को वामपंथी दलो एवं क्षेत्रीय दलो ने समर्थन देकर बचाया था, लेकिन वह साझा सरकार नही थीं। इसे अमूर्त गठबंधन सरकार का उदाहरण माना जा सकता है। 1967 के आम चुनाव के बाद अधिकांश उत्तर भारत के राज्यों में गठबंधन सरकारे अस्तित्व में रहीं, जबकि इंदिरा गांधी केन्द्र में दुबारा कांग्रेस को सत्ता में बहुमत के साथ वापस लाने में सफल रही, किन्तु राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार इंदिरा गांधी ने कांग्रेस के बहुलवादी स्वरूप् को व्यक्तिगत निष्ठा तक पहुँचा दिया और उसी का परिणाम था, उनकी सत्ता में वापसी।

केन्द्रीय स्तर पर गठबंधन सरकार की स्थापना की प्रक्रिया बाद में प्रारंभ हुयी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा तीन दशकों तक शासन संचालन किया गया। 1970 ई. के दशक तक भारत में कांग्रेस के विकल्प के रूप में किसी भी राष्ट्रीय दल का राष्ट्रीय स्तर पर अभ्युदय नही हुआ था। किन्तु इस दशक में ही भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये। 1977 में पहली बार गैर-कांग्रेस वाद के रूप में सत्ता परिवर्तन हुआ और नवोदित जनता पार्टी के नेतृत्व में पहली गठबंधन के रूप में जनता दल के घटकों में किये नीतिगत मतैक्य नही था। इनका सम्मिलन (मर्जर) इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लागू किए जाने के विरोध में हुआ था। दूसरी बार केन्द्रीय स्तर पर गठबंधन सरकार की स्थापना 'राष्ट्रीय मोर्चा' के नेतृत्व में 1989 में हुयी। राष्ट्रीय मोर्चा का अभ्युदय जनता दल, कम्युनिष्ट पार्टियाँ, कई अन्य क्षेत्रीय दल तथा भाजपा के संयुक्त प्रयास के रूप में हुआ। 1977 की भांति इस बार भी विपक्ष का आधार कांग्रेस एवं उसका कुशासन ही था।

अतः गठबंधन के घटक दलों के बीच समन्वय सहयोग एवं सहअस्तित्व की भावनागत कमी के कारण सरकार पदच्युत हो गयी। यद्यपि 1989-91 के अल्प समयावधि में बनी गठबंधन सरकार का स्वरूप बदल गया, जहां पहले नेतृत्व में कांग्रेस विरोध था वही दूसरा कांग्रेस के द्वारा वाह्य समर्थित था परन्तु 8 माह के बाद ही कांग्रेस ने समर्थन वापस लेकर इस सरकार को भी हटने के लिए मजबूर कर दिया।

1991 के चुनाव में कांग्रेस ने कुछ अन्य दलों के बाह्य समर्थन से अपनी सरकार बनाई। यह सरकार अपने कार्यकाल के अंतिम दिनों में बहुमत प्राप्त करने में सफल रही। वर्ष 1996 के चुनाव एक बार फिर गठबंधन सरकार का मार्ग प्रशस्त कर गये। चुनाव बाद अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में बनी अल्प मत सरकार में भारतीय जनता पार्टी अकालीदल, शिवसेना, समतापार्टी आदि शामिल थे परन्तु आवश्यक बहुमत के अभाव में इस गठबंधन सरकार ने अपना त्यागपत्र दे दिया। तत्पश्चात उभरे राजनीतिक माहौल में 13 राजनीतिक दलों ने मिलकर संयुक्त मोर्चा सरकार बनाई जिसे 1990 की भांति एक बार पुनः कांग्रेस ने बाहर से समर्थन दिया। गठबंधन का नेतृत्व एच डी देवगौड़ा ने किया कालान्तर में कांग्रेस पार्टी द्वारा देवगौड़ा सरकार से समर्थन वापस ले लिया गया एवं नेतृत्व परिवर्तन कर पुनः नये नेता इन्द्र कुमार गुजराल के नेतृत्व वाली मोर्चा सरकार को समर्थन दिया गया परंतु वर्ष 1997 की समाप्ति के समय यह समर्थन कांग्रेस द्वारा वापस ले लिया गया परिणामतः नये मध्यावधि चुनाव कराने पडे। वर्ष 1998 के चुनाव के पूर्व चुनावी समय में जनता के पास तीन विकल्प थे जिनका स्वरूप गठबंधन की भांति था। पहला कांग्रेस तथा कई राज्यों में उसकी सहयोगी के रूप में गठबंधन दूसरा, भाजपा समर्थित गठबंधन एवं तीसरा सत्तच्युत संयुक्त मोर्चा किन्तु प्रबुद्ध भारतीय मतदाताओं ने एक बार पुनः अनिश्चय की स्थिति बना डाली। चुनाव पश्चात् गठबंधन का विस्तार एक अल्पमत सरकार अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में पदारूढ़ हुयी। इस गठबंधन ने अपनी 'विषम जातीयता' से उबरने के लिए एक 'नेशनल एजेण्डा फॉर गवर्नेन्स' बनाया किन्तु सत्ता का यह मार्ग दर्शक सिद्धांत आपसी अन्तर्कलह का शिकार बना एवं तेरह महीने के अल्पकाल में ही अपनी पूर्ववर्ती गठबंधन सरकारों की तरह धाराशायी हो गयी। विपक्षी दलों द्वारा एक गठबंधन सरकार का प्रयास किया गया था, किन्तु बहुमत न मिल सका। अन्ततः मध्यावधि चुनाव कराये गये। वर्ष 1999 के चुनावों में पुनः त्रिशंकु संसद का निर्माण किया किन्तु चुनावेत्तर गठबंधन का विस्तार कर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने केन्द्र में सरकार बनायी, जिसने 2004 तक सफलतापूर्वक शासन किया। गठबंधन के सरकार के रूप में संप्रग के मनमोहन सिंह (2004-2014) दो बार लगातार भारत के प्रधानमंत्री के पद पर कार्य किया। उनका कार्यकाल अनेक आर्थिक सुधारों के लिए जाना जाता है। नरेन्द्र मोदी (2014 से निरंतर) दो सफल कार्यकाल के बाद तीसरी बार भी गठबंधन सरकार का प्रधानमंत्री के रूप में नेतृत्व कर रहे हैं। इनका विगत कार्यकाल अनेक महत्वपूर्ण निर्णय के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक संवृद्धि, अधोसंरचना विकास के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र की कीर्ति एवं गरिमा बढ़ाने के लिए याद किया जा रहा है। यू.पी.ए. एवं एन.डी.ए. दोनों गठबंधनों का निम्नांकित विकास के सूचकांकों पर अध्ययन किया गया है।

विकास के सूचकांक के आधार पर दोनों सरकारों- संप्रग (2004-14) एवं राजग (2014-24) की तुलनात्मक समीक्षा

(अ) आर्थिक के सूचकांक

विवरण	संप्रग (2004–14)			राजग (2014–24)	
	2004	2009	2014	2019	2024
1. जी.डी.पी. रैंक	12वां	11वां –1	–	5वां	5वां –6
2. जी.डी.पी. विकार–दर	7.5%	7.86%	7.4%	4.2%	8.4%
3. प्रतिव्यक्ति आय	620 नोमिनल 3440 पीपीपी	1070 नोमिनल 3900 पीपीपी	1570 नोमिनल 9350 पीपीपी	2134 नोमिनल 7333 पीपीपी	2403 नोमिनल 9842 पीपीपी
4. मँहगाई दर	3.8%	10.9%	6.4%	4.8%	3.54%
5. बेरोजगारी दर	8.2%	9.4%	8.8%	7.9%	7.0%
6. गरीबी दर	27.5%	29.8%	21.9%	17.8%	8.5%
7. विदेशी मुद्रा भंडार	141 बिलियन	283 बिलियन	315 बिलियन	412 बिलियम	623 बिलियन
8. विदेशी कर्ज	124 बिलियन	224 बिलियन	461 बिलियन	557 बिलियम	663 बिलियन

(ब) सामाजिक विकास के सूचककांक

विवरण	संप्रग (2004–14)			राजग (2014–24)	
	2004	2009	2014	2019	2024
1. जीवन प्रत्याशा	63.5	65.8	67.6	70.5	70.62
2. कुल साक्षरता दर	65.4%	69.3%	74.4%	77.7%	85.9%
महिला साक्षरता दर	75.3%	78.3%	82.1%	84.7%	94.1%
पुरुष साक्षरता दर	54.2%	59.4%	65.5%	70.3%	76.9%
3. शिशु मृत्यु दर (आई.एम.आर.)	58 प्रति 1000 जीवित जन्म	47 प्रति 1000 जीवित जन्म	40 प्रति 1000 जीवित जन्म	33 प्रति 1000 जीवित जन्म	25 प्रति 1000 जीवित जन्म

4. मातृ मृत्यु दर (आई.एम.आर.)	230 प्रति 1000 जीवित जन्म	230 प्रति 1000 जीवित जन्म	190 प्रति 1000 जीवित जन्म	145 प्रति 1000 जीवित जन्म	103 प्रति 1000 जीवित जन्म
5. जनसंख्या वृद्धि दर	1.7%	1.6%	1.2%	1.2%	0.81%
6. 65 वर्ष से अधिक की जनसंख्या	4.5%	5.1%	5.5%	5.7%	7.0%
7. 15 वर्ष से कम की जनसंख्या	30.9%	29.7%	28.5%	26.3%	24.0%

(स) स्वास्थ्य सूचकांक

विवरण	संप्रग (2004–14)			राजग (2014–24)	
	2004	2009	2014	2019	2024
1. कुल प्रजनन दर	3.1 बच्चे प्रति महिला	2.6 बच्चे प्रति महिला	2.3 बच्चे प्रति महिला	2.3 बच्चे प्रति महिला	2.1 बच्चे प्रति महिला
2. टीकाकरण कवरेज	55% डीटीपी 45% खसरा	66% डीटीपी 58% खसरा	83% डीटीपी 74% खसरा	87% डीटीपी 83% खसरा	93.23% डीटीपी 83% खसरा
3. एच.आई.वी./एड्स का प्रसार (15 से 49 आयुवर्ग में)	0.9%	0.3%	0.3%	0.2%	0.2%
4. मलेरिया की घटना	–	1.5 मिलियन की देखभाल	1.1 मिलियन की देखभाल	0.2 मिलियन की देखभाल	1.2 मिलियन की देखभाल
5. तपेदिक	–	1.9 मिलियन	2.2 मिलियन	2.7 मिलियन	2.5 मिलियन

(द) शिक्षा सूचकांक

विवरण	संप्रग (2004–14)			राजग (2014–24)	
	2004	2009	2014	2019	2024
1. जीइआर	98.5% प्राथमिक 58.4% माध्यमिक	103.3% प्राथमिक 63.4% माध्यमिक	114.3% प्राथमिक 73.2% माध्यमिक	119.3% प्राथमिक 85.3% माध्यमिक	124.3% प्राथमिक 89.5% माध्यमिक
2. ड्राप आउट दर	35.4% प्राथमिक 53.2% माध्यमिक	31.4% प्राथमिक 48.5% माध्यमिक	26.1% प्राथमिक 42.2% माध्यमिक	20.6% प्राथमिक 35.4% माध्यमिक	25% प्राथमिक 32.6% माध्यमिक
3. छात्र तथा अध्यापक अनुपात	35.1% प्राथमिक 27.1% माध्यमिक	32.1% प्राथमिक 25.1% माध्यमिक	29.1% प्राथमिक 22.1% माध्यमिक	26.1% प्राथमिक 20.1% माध्यमिक	20.1% प्राथमिक 30.1% माध्यमिक

(य) आधारभूत संरचना विकास सूचकांक

विवरण	संप्रग (2004–14)			राजग (2014–24)	
	2004	2009	2014	2019	2024
1. विद्युत उपयोग	55% घर	63% घर	75% घर + 20%	94% घर	99.2% घर + 24%
2. पेयजल उपयोग	72% घर	85% घर	92% घर + 20%	96% घर	99.2% घर + 7%
3. स्वच्छता सुविधा	30% घर	44% घर	54% घर + 24%	71% घर	89% घर + 35%
4. टेलीफोन घनत्व	14.4% प्रति 1000 व्यक्ति	34.4% प्रति 1000 व्यक्ति	74.4% प्रति 1000 व्यक्ति + 60%	84.51% प्रति 1000 व्यक्ति	85.69% प्रति 1000 व्यक्ति + 12%
5. इन्टरनेट उपयोग	2.5 मिलियन 0.2%	81 मिलियन 6.9%	243 मिलियन + 19.44	560 मिलियन + 44.8	1.4 बिलियन 52% + 33

उपरोक्त दोनों प्रधानमन्त्रियों ने भारत के विकास में अनेक महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि मनमोहन सिंह ने समग्र विकास सामज कल्याण के लिए कार्य किया। वहीं पर नरेन्द्र मोदी अपने करिश्माई व्यक्तित्त्व के लिए पहचाने गए, जिन्होंने विकास के लिए कठोर लक्ष्य निर्धारित करने के साथ ही ''सबका साथ, सबका विकास'' पर बल दिया।

मनमोहन सिंह की विदेश नीति में पड़ोसियों से अच्छे संबंध के साथ अमेरिका एवं यूरोपियन यूनियन के साथ भी संबंधों में सुधार किया गया। नरेन्द्र मोदने के कार्यकाल में सभ्ज्ञी वैश्विक शक्तियों के साथ, जैसे- गल्फ देशों, सुदूर पूर्व के देशों और पड़ोसियों से भ अच्छे संबंध बने। नरेन्द्र मोदी ने धारा 370 की समाप्ति के साथ ही आतंकवाद पर प्रहार किया, वहीं काशी, मथुरा, अयोध्या एवं महाकाल कारिडोर के निर्माण के साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विकास किया है।

दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि डा॰. मनमोहन सिंह की अपेक्षा नरेन्द्र मोदी ने विगत 10 वर्षों में अधिक कठोर फैसले ले सके हैं, जैसे- वन रैंक वन पेंशन, धारा 370 की समाप्ति, तीन तलाक समाप्ति, सी.ए.ए. कानून, नोटबंदी, राम मंदिर का निर्माण, ओ.पी.एस. के स्थापन पर यू.पी.एस., इ.डब्ल्यू.एस. को 10 प्रतिशत आरक्षण, जी.एस.टी., मेक इन इण्डिया, स्वच्छ भारत अभियान, डिजिटल इण्डिया, पी.एम. जनधन योजना, एन.आर.सी., आधार कार्ड, नए श्रम कानून, एन.इ.पी. 2020, सना में सी.डी.एस. पद, स्पेस क निजीकरण, आयुष्मान योजना इत्यादि ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़े।

निष्कर्ष

लोकतंत्रीय प्रणाली में गठबंधन राजनीति का एक अंग होता है इसमें बहुत सारे बहुमत से कम संख्या वाले दल सरकार चलाने के लिए एक साथ जुड़ते है। छोटे-छोटे समूह जब एक मंच पर अपने व्यापक मतभेदों को भुलाकर एक साथ जुड़ते है और बहुमत का सृजन करते है तो इसे गठबंधन या गठजोड़ कहा जाता है। गठबंधन की सरकारें प्रायः सहमति की राजनीति का परिणाम होती है। यह गठबंधन चुनाव के पूर्व हो सकता है अथवा चुनाव के बाद। चुनाव पूर्व हुए विभिन्न गठबंधनों में अवसर वादिता का तत्व कम होता है तथा साथ-साथ काम करने का स्वभाव भी उत्पन्न होता है। अनुभव बताता है कि चुनाव पूर्व के गठबंधन अधिक स्थाई और अधिक सहज रूप से चलने वाले होते है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि -

1. नरेन्द्र मादी किसी भी अन्य गबठंधन की सरकार से अधिक कठोर एवं महत्वपूर्ण निर्णय ले सके, क्योंकि उनके दल के पास बहुमत से अधिक सीटें थी।
2. कोविड-19 जैसी विश्वव्यापी विभीषिका के बावजूद के कार्यकाल में विकास के चयनित संकेतों में आशातीत वृद्धि हुयी।
3. गठबंधन की सकारों की सफलता इस बात पर निर्भर है कि प्रमुख दल के पास बहुमत का आंकड़ा हो अथवा बहुत ही कम संख्या की कमी हो।
4. चुनाव पूर्व किए गए गठबंधन चुनाव पश्चात् के गठबंधनों की अपेक्षा अधिक प्रभावी होते हैं।
5. गठबंधन की सरकारें प्रायः (एन.डी.ए. को छोड़कर) स्थायी सरकार देने में विफल रही हैं।
6. विकास की गति में सातत्यता के लिए गठबंधन की सरकारें उपयुक्त साबित नहीं हुई हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अहमद, जैदी अमीन (1977). द एनुअल रजिस्टर ऑफ इण्डियन पोलिटिकल पार्टीज, नई दिल्ली.
2. अग्रवाल, लक्ष्मी नारायण (2000). समकालीन राजनीति मुद्दे, अभय प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. अगरवाल, रामगोपाल, कुमार, राजीव और शाह, राजेश (2016). उभरता भारत, एकेडेमिक भारत, दिल्ली.
4. आनंद सं. अरुण (2014). नमो वाणी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. आचार्य डा॰. राजेश कुमार, तन्ना, गिरीश चन्द्र (2016). महात्मा गांधी से मोदी, नरोल्ड प्रकाशन, अहमदाबाद.
6. एमजीपी-सेना-जीएसएम ने गोवा चुनाव लड़ने के लिए महागठबंधन बनाया, द इकोनॉमिक टाइम्स, 13 जनवरी 2017 को मूल से संग्रहीत, 11 जनवरी 2017 को लिया गया.
7. कपूर, मस्तराम (2014). उत्तरप्रदेश की राजनीति और मुलायम सिंह यादव, लेखक मंच, नई दिल्ली.
8. पंवार, प्रीति (2014). पुष्टि-डीएमडीके-बीजेपी ने लोकसभा चुनाव के लिए तमिलनाडु में गठबंधन बनाया, न्यूज वनइंडिया, न्यूज वन इंडिया डाट काम, 4 मार्च 2014 को मूल से संग्रहीत, 13 अप्रैल 2014 को लिया गया.
9. मकवाना, किशोर (2014). सामाजिक समरसता, प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली.
10. देव, संदीप (2014). साजिश की कहानी तथ्यों की जुबानी, कपोल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली.
11. द्विवेदी संजय (2014). मोदी लाइव, मीडिया विमर्श, रायपुर, छत्तीसगढ़.
12. भल्ला, लक्ष्मीनारायण एवं अग्निहोत्री, डॉ. कुलदीप चन्द्र (2014). अराजगता की राजनीति, संजीवनी प्रकाशन प्रा.लि., दिल्ली.
13. सिंह, पंकज के. (2015). स्पच्छ भारत समृद्ध भारत, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली.